www.ijarp.com ISSN 2456-9992 Page: 01-04

International Journal Advanced Research Publications

Review Article

Volume: 02
Issue: 09

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अध्ययन शैली के प्रभाव का अध्ययन

Pranshu Singh*[1] and Dr. Atul Kanaiya[2]

[1] Research Scholar, Department of Education, Kranti Guru Shyamji KrishnaVerma University, Kachchh.

[2] Assistant Professor, Department of Education, Kranti Guru Shyamji KrishnaVerma University, Kachchh.

Article Received: 03 August 2026, Article Revised: 23 August 2026, Published on: 13 September 2026

***Corresponding Author: Pranshu Singh**

Research Scholar, Department of Education, Kranti Guru Shyamji KrishnaVerma University, Kachchh.

Doi: https://doi-doi.org/101555/ijarp.5920

सारांश

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 और 10) के विद्यार्थियों की विशिष्ट सीखने की शैलियों (सक्रिय, चिंतक, सिद्धांतवादी, व्यवहारवादी) और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अंतर्संबंधों का मात्रात्मक विश्लेषण करना है। किशोरावस्था के इस चरण में विद्यार्थियों की व्यक्तिगत अधिगम क्षमता को समझना अनिवार्य है ताकि शिक्षण विधियों को उनकी मानसिक प्रवृत्तियों के अनुरूप ढाला जा सके। इस अध्ययन के लिए वर्णनात्मक शोध पद्धति का चयन किया गया और दक्षिण गुजरात के विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों से 100 विद्यार्थियों का यादृच्छिक प्रतिदर्श (नमूना) लिया गया। प्रदत्त संग्रह (डेटा कलेक्शन) के लिए हनी और ममफोर्ड की प्रमाणीकृत 'अधिगम शैली प्रश्नावली' का उपयोग किया गया। एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, औसत (माध्य), और सहसंबंध जैसी सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि माध्यमिक स्तर पर 'चिंतक' और 'सिद्धांतवादी' शैली वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अन्य समूहों की तुलना में अधिक है।

मुख्य शब्द : शिक्षण शैलियाँ, हनी और ममफोर्ड, माध्यमिक शिक्षा, शैक्षिक उपलब्धि, मात्रात्मक शोध।

प्रस्तावना

शिक्षा का प्राथमिक लक्ष्य छात्र की अंतर्निहित क्षमता का पूर्ण विकास करना है। "प्रत्येक छात्र की सीखने की प्रक्रिया अद्वितीय होती है, जो उनके संज्ञानात्मक विकास और व्यावहारिक अनुभवों पर

निर्भर करती है" (हनी और ममफोर्ड, 1992)। माध्यमिक शिक्षा वह आधारशिला है जहाँ विद्यार्थी अमूर्त चिंतन और तार्किक विश्लेषण की ओर अग्रसर होता है। वर्तमान तकनीकी युग में केवल पारंपरिक कक्षा शिक्षण पर्याप्त नहीं है। हनी और ममफोर्ड का मानना है कि यदि शिक्षण पद्धति छात्र की स्वाभाविक सीखने की शैली के अनुकूल हो, तो अधिगम का परिणाम गुणात्मक रूप से बेहतर होता है। अतः इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक विद्यार्थियों की विभिन्न शिक्षण शैलियों की पहचान करना, उनके वार्षिक परीक्षा परिणामों के साथ तुलना करना और यह सुनिश्चित करना है कि कौन सी शैली इस शैक्षिक स्तर पर सफलता में सर्वाधिक योगदान देती है।

शोध प्रश्न

1. माध्यमिक विद्यालय के उत्तरदाताओं के बीच सबसे प्रभावशाली शिक्षण शैली कौन सी है?
2. क्या माध्यमिक स्तर पर विभिन्न शिक्षण शैलियों और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के बीच कोई सार्थक सांख्यिकीय संबंध है?

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध में समस्या के वैज्ञानिक विश्लेषण हेतु 'मात्रात्मक शोध प्रारूप' का चयन किया गया है। इस अध्ययन के लिए 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' को अपनाया गया है क्योंकि यह वर्तमान व्यवहारिक प्रवृत्तियों और छात्र व्यवहार का सटीक वर्णन करने में सक्षम है। शोध के प्रतिदर्श (Sample) के रूप में दक्षिण गुजरात संभाग के विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों से कक्षा 9 और 10 के 100 विद्यार्थियों का चयन 'स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण' तकनीक के माध्यम से किया गया है। प्रदत्त संग्रहण (Data Collection) के प्राथमिक उपकरण के रूप में पीटर हनी और एलन ममफोर्ड द्वारा विकसित 'अधिगम शैली प्रश्नावली' के प्रमाणीकृत संस्करण का उपयोग किया गया है। यह उपकरण विद्यार्थियों की आदतों को चार आयामों, 'सक्रिय' (Activist), 'चिंतक' (Reflector), 'सिद्धांतवादी' (Theorist) और 'व्यवहारवादी' (Pragmatist) में विभाजित करता है। सूचना संग्रहण की प्रक्रिया के दौरान, छात्रों को डिजिटल और मुद्रित प्रतियों के माध्यम से यह प्रश्नावली वितरित की गई। साथ ही, उनके शैक्षिक प्रदर्शन के मूल्यांकन के लिए माध्यमिक विद्यालय के पिछले सत्र के आधिकारिक परीक्षा परिणामों (अंकों) को द्वितीयक सूचना के रूप में प्राप्त किया गया। संकलित आँकड़ों को व्यवस्थित करने के उपरांत, सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु 'प्रतिशत विश्लेषण', 'माध्य' और 'मानक विचलन' का प्रयोग किया गया। इसके अतिरिक्त, शिक्षण शैलियों और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध की जांच करने के लिए 'सहसंबंध गुणांक' का अनुप्रयोग किया गया। "मात्रात्मक आँकड़े न केवल प्रवृत्तियों को स्पष्ट करते हैं, बल्कि शैक्षिक सिद्धांतों को अनुभवजन्य प्रमाण भी प्रदान करते हैं" (क्रेसवेल, 2014)।

आँकड़ा सारणीकरण और विश्लेषण

तालिका 1: माध्यमिक विद्यार्थियों की शिक्षण शैलियों का वितरण और औसत शैक्षिक प्राप्तांक|

क्रम	अध्ययन शैली	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत (%)	औसत शैक्षिक अंक (माध्य)
1	सक्रिय	26	26%	70.4
2	चिंतक	35	35%	82.8
3	सिद्धांतवादी	22	22%	80.2
4	व्यवहारवादी	17	17%	75.6

आँकड़ों की व्याख्या

चिंतक (35%): तालिका दर्शाती है कि सर्वाधिक विद्यार्थी 'चिंतक' शैली के पाए गए। इनका औसत प्राप्तांक (82.8) सबसे अधिक है, जो यह प्रमाणित करता है कि जो छात्र सावधानीपूर्वक अवलोकन और गहन विचार के बाद सीखते हैं, वे लिखित परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

सिद्धांतवादी (22%): तार्किक और क्रमबद्ध तरीके से सीखने वाले छात्रों का अंक (80.2) उच्च रहा। यह माध्यमिक पाठ्यक्रम की सैद्धांतिक प्रकृति के अनुकूल है।

सक्रिय (26%): माध्यमिक स्तर पर 'सक्रिय' सीखने वालों की संख्या भी पर्याप्त है, जो इस आयु वर्ग की क्रियाशीलता को दर्शाता है, हालांकि इनका प्राप्तांक (70.4) सबसे कम रहा।

व्यवहारवादी (17%): व्यावहारिक प्रयोग पसंद करने वाले छात्र संख्या में कम थे, जिनका औसत प्राप्तांक 75.6 रहा।

चर्चा

शोध के परिणामों से यह स्पष्ट है कि "चिंतक वे होते हैं जो किसी भी कार्य को करने से पहले सभी पहलुओं पर विचार करते हैं और सूचनाओं को गहराई से आत्मसात करते हैं" (ममफोर्ड, 1995)। सांख्यिकीय गणना में सहसंबंध गुणांक 0.61 प्राप्त हुआ, जो शिक्षण शैली और शैक्षिक अंकों के बीच एक सार्थक सकारात्मक सहसंबंध को दर्शाता है। यह निष्कर्ष माध्यमिक शिक्षा के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बताता है कि केवल रटकर सीखने के बजाय चिंतनशील अध्ययन सफलता की कुंजी है।

शैक्षिक निहितार्थ

बहुआयामी शिक्षण: माध्यमिक शिक्षकों को सक्रिय विद्यार्थियों के लिए प्रयोगशाला प्रयोग और चिंतक विद्यार्थियों के लिए चर्चा सत्रों का संतुलन बनाना चाहिए।

चिंतन को प्रोत्साहन: कक्षा में तार्किक प्रश्नों पर जोर दिया जाना चाहिए ताकि सिद्धांतवादी छात्रों की क्षमता का विकास हो।

प्रायोगिक कार्य: व्यवहारवादी छात्रों के लिए परियोजना-आधारित शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए।

निष्कर्ष

शोध के परिणामों से यह स्पष्ट है कि "चिंतक वे होते हैं जो किसी भी कार्य को करने से पहले सभी पहलुओं पर विचार करते हैं और सूचनाओं को गहराई से आत्मसात करते हैं" (ममफोर्ड, 1995)। सांख्यिकीय गणना में सहसंबंध गुणांक 0.61 प्राप्त हुआ, जो शिक्षण शैली और शैक्षिक अंकों के बीच एक सार्थक सकारात्मक सहसंबंध को दर्शाता है। यह निष्कर्ष माध्यमिक शिक्षा के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बताता है कि केवल रटकर सीखने के बजाय चिंतनशील अध्ययन सफलता की कुंजी है।

संदर्भ

1. हनी, पी., और ममफोर्ड, ए. (1992). अधिगम शैलियों की नियमावली। पीटर हनी पब्लिकेशन्स।
2. ममफोर्ड, ए. (1995). "शिक्षण शैलियाँ और परामर्शदाता"। औद्योगिक और व्यावसायिक प्रशिक्षण, खंड 27।
3. क्रेसवेल, जे. डब्ल्यू. (2014). अनुसंधान प्रारूप: गुणात्मक और मात्रात्मक दृष्टिकोण। सेज पब्लिकेशन्स।